

धसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II-- अव 3-- उपलब्ह (ii)

PART II-Section 3-Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 420]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, नवम्बर 19, 1970/कार्तिक 28, 1892

No. 420]

NEW DELHI, THURSDAY, NOVEMBER 19, 1970/KARTIKA 28, 1892

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह ग्रलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

ORDER

INCOMETAX

New Delhi, the 18th November 1970

THE TAXATION LAWS (EXTENSION TO UNION TERRITORIES) (REMOVAL OF DIFFICULTIES) ORDER NO. 2 OF 1970

S.O. 3770.—Whereas certain difficulties have arisen in giving effect to the provisions of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) in the Union territories of Dadra and Nagar Haveli, Goa, Daman and Diu and Pondicherry;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 7 of the Taxation Laws (Extension to Union Territories) Regulation, 1963 (3 of 1963), the Central Government hereby makes the following Order, namely:—

- 1. Short title and commencement.—(1) This Order may be called the Taxation Laws (Extension to Union Territories) (Removal of Difficulties) Order No. 2 of 1970.
 - (2) It shall be deemed to have come into force on the 1st day of April, 1963.
- 2. Computation of aggregate depreciation allowable and written down value.—In making any assessment under the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), all depreciation actually allowed under the local laws shall be taken into account in computing the agreegate of all deductions in respect of depreciation referred to in clause (i) of sub-section (2) of section 34 and the written down value under sub-clause (2) of clause (6) of section 43 of the said Act:

. ,

Provided that where in respect of any asset, depreciation has been allowed for any year both in the assessment made under the local law and in the assessment made under the income-tax Act, 1961, or under the Indian Income-tax Act, 1922 or any Act repeated by that Act, or under the Indian Income-tax Act, 1886, the greater of the two sums allowed shall only be taken into acount:

Provided further that where in respect of any period, no depreciation was actually allowed under the local law or the depreciation actually allowed cannot be ascertained, depreciation in respect of that period shall be calculated at the rate for the time being in force under the Income-tax Act, 1961 or under the Indian Income-tax Act, 1922, or any Act repealed by that Act or under any executive orders, issued when the Indian Incometax Act, 1886 was in force, as the case may be, and the depreciation so calculated shall be deemed to be the depreciation actually allowed under the local law.

Explanation.—For the purposes of this paragraph, "local law" means-

- (i) in relation to the Union territory of Dadra and Nagar Haveli, any law relating to income-tax or super-tax other than the Income-tax Act, 1961, in force in that territory immediately before the 1st day of April, 1963; and
- (ii) in relation to the Union territories of Goa, Daman and Diu and Pondicherry, any law relating to income-tax or super-tax in force in the Union territory concerned immediately before the 1st day of April, 1963.

[No. 181/F. No. 1(345)/68-TPL.]

R. N. MUTTOO, Addl. Secy.

वित्त मंत्रालय

(राजस्व ग्रीर बीमा विभाग)

ग्रादेश

ग्रायकर

नई विल्ली, 18 नवम्बर, 1970

कराधात विधियां (संघ राज्य क्षेत्रों तक विस्तारण) (किंदिराईयों का िराकरण) श्रावेश सं० 2, 1970

का० गा० 3770 — यतः श्राय कर श्रिधिनियम, 1961 (1961 का 41) के उपबन्धों को दादर भौर नागर हवेली, गोवा, दमण और दीव श्रौर पांक्षिशेरी संघ राज्य क्षेत्रों में प्रभावी करने में कित्तपय कठिनाईयां पैदा हो गई हैं;

हिंग्रत: श्रव कराधान विधियां (संघ राज्य क्षेत्रों तक विस्तारण) विनियम, 1963(1963 का 3) की धारा 7 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा निम्नलिखित श्रादण बनाती है, श्रथात्:—

- संक्षिप्त नाम ग्रीर प्रा भ--(1) यह श्रादेश कराधान विधिया (संघ राज्य क्षेत्रों तक विस्तारण) (कठिनाइयों का निराकरण) श्रादेश अंख्या 2, 1970 कहा जा सकेगा ।
 - (2) यह अप्रैल, 1963 के प्रथम दिन को प्रयुक्त हुआ समझा जाएगा।
- 2. संकलित धनुनेय धवक्षयण गौर प्रविक्तिल भृत्य की संगणना आय कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कोई निर्धारण करने में स्थानीय विधियों के अधीन वस्तिविक रूप से धननान किए गए सब अवक्षयणों को उपता अधिनियम की धारा 34 की उपधारा

(2) के खंड (1) में निर्दिष्ट अवक्षयण की बाबत में संकलित सभी कटौतियों और धारा 43 के खंड (6) के उपखंड (ख) के अधीन अवलिखित मूख्य की संगणना करने में ध्यान में रखा जाएगा:

परन्तु जहां किसी मास्ति की बाबत में किसी वर्ष के लिए, दोनों, किसी स्थानीय विधि के अधीन किए गए निर्धारण में भौर आयकर श्रिधिनियम. 1961 के अधीन, या भारतीय आयकर श्रिधिनियम, 1922 या उस श्रिधिनियम द्वारा निरासित किसी श्रिधिनियम के अधीन या भारतीय आयकर श्रिधिनियम, 1886 के श्रिधीन किए गए निर्धारण में, श्रवक्षयण अनुज्ञात किया गया है, तो इन दोनों राशियों में से जो श्रिधिक है उसी को केवल ध्यान में रखा जाएगा:

परन्तु यह और कि जहां किसी कालावधि की बाबत स्थानीय विधि के अधीन कोई अवक्षयण व(स्तविक रूप से अनुज्ञात नहीं किया गया था या वास्तविक रूप से अनुज्ञात अवक्षयण अभिनिश्चित नहीं किया जा सकता है वहां उस कालावधि की बाबत अवक्षयण, यथास्थिति आयकर अधिनियम, 1961 के अधीन या भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 या उस अधिनियम द्वारा निरासित किसी अधिनियम के अधीन या जब भारतीय आयकर अधिनियम, 1886 प्रवृत्त था तब जारी किए गए किसी कार्यणालक आदेश के अधीन, तत्समय प्रवृत्त दर पर संगणित किया जाएगा और इस प्रकार संगणित अवक्षयण स्थानीय विधि के अधीन वास्तविक रूप से अनुजात अवक्षयण समझा जाएगा।

स्य टोकरण.-इस पैरा प्रयोजन के लिए 'स्थानीय विधि' से-

- (i) दादर भीर नागर हवेली संघ राज्य क्षेत्र के सम्बन्ध में अप्रैल, 1963 के प्रथम दिन से अध्यवहित पूर्व उस राज्य क्षेत्र में प्रवृत्त आयकर अधिनियम, 1961 से भिन्न आयकर या अधिकार से संबंधित कोई विधि ; भौर
- (ii) गोवा, दमण और दीव भौर पाण्डिचेरी संघ राज्य क्षेत्रों के सम्बन्ध में भप्रैल, 1963 के प्रथम दिन से श्रव्यवहित पूर्व सम्बन्धित संघ राज्य क्षेत्र में प्रवृत्त श्रायकर या श्रीधकर से संबन्धित कोई विधि। श्रिभिप्रेत है।

[मं• 181/एफ॰ सं॰ 1(345)/68-टी पी एक.] भार० एन० मुट्टू, श्रवर सचिव।